खादीवाले शान्ति-सैनिक भी हैं

यहाँपर खादी के कार्यकर्ता बैठे हैं। हम समझते हैं कि सब के सब खादी-कार्यकर्ता शांति-सैनिक हैं। क्योंकि वे शांति का काम कर रहे हैं। समाज में अशांति जो होती है, उसका एक बड़ा कारण बेकारी है, इसलिए जो लोग बेकारी मिटाने के काम में लगे हैं, क्या वे शांति-सैनिक नहीं हैं? अगर नहीं हैं तो वैसा कहें। मगर मैं उनसे पूछूँगा कि वे शांति-सैनिक कैसे नहीं हैं? सामने झगड़ा चल रहा है तो क्या वे यूँ कहकर भागेंगे कि हमारा काम तो खादी या वूलन कपड़ा बेचना है? वे इस तरह कहेंगे भी तो क्या दुनिया में कोई उनका कपड़ा खरीदेगा? समझना चाहिए कि खादी की प्रतिष्ठा इसीलिए है कि उसके वास्ते हम जिंदगीभर काम करेंगे और मर मिटने का मौका आयेगा तो मर मिटेंगे। जो माँ बच्चे की परवरिश करती है, उसके लिए मेहनत करती है, वह बच्चे पर खतरा आने पर क्या उसे छोड़ देगी? भाग जायगी? मानवी माँ की बात तो क्या कहें, किसी जानवर की माँ भी इस तरह नहीं भागती है। शेरनी का बच्चा किसीने पकड़ लिया तो शेरनी पकड़नेवाले पर बार-बार हमला करती है और वह तब तक हमला करती रहती है, जब तक उसे कत्ल नहीं कर डालती। शेरनी अपने बच्चे के बचाव के लिए मर मिटती है। क्योंकि उसने उसका पालन किया होता है। तो क्या खादी-कार्यकर्ता उसके बचाव के लिए नहीं मर मिटेंगे? जिंदगीभर चौबीसों घंटे वे खादी की हिफाजत करेंगे और जब उसपर प्रहार होने का मौका आयेगा तो क्या वे भाग जायँगे? ऐसा न कभी हुआ है और न होगा। बिहार में वैद्यनाथ बाबू ने शांति-सैनिकों के लिए माँग की तो पचासों खादी-कार्यकर्ता शांति की स्थापना का काम करने के लिए चले गये। दूसरे लोग बिना हथियार के जाने में डरते थे। लेकिन खादीवाले निःशस्त्र होकर वहाँ गये और उन्होंने वहाँ कुछ काम किया। इससे सबूत मिल गया। इसीलिए मैं कहता हूँ कि खादीवाले भी शांति-सैनिक, लोक-सेवक ही हैं।

सर्वव्यापी सर्वोदय

इसपर पूछा जायगा कि फिर उन्हें फिर से वैसा लिखने के लिए क्यों कहते हो? फिर से प्रतिज्ञा लेने के लिए क्यों कहते हो? हम इसलिए कहते हैं कि अपनी जमात में सब तरह के विचार माननेवाले लोग इकट्ठा हुए हैं। हम लोक-सेवक-संघ की जो बापू की कल्पना थी, उसे नये सिरे से और नये प्रकार से रख रहे हैं। क्योंकि बापू तो चाहते थे कि कांग्रेस लोक-सेवक-संघ बने। अगर वह बनती तो बहुत बड़ी ताकत बनती और कुल हिन्दुस्तान में कई लोक-सेवक बनते, हिन्दुस्तान की सबसे बड़ी जमात लोक-सेवक-संघ बनती। लेकिन हम तो छोटी जमात हैं। इसलिए हम लोक-सेवक-संघ नहीं, बल्कि सर्व-सेवा-संघ बनाने का दावा कर रहे हैं। हम एक नम्र जमात हैं। लेकिन बापू ने जो उसूल रखे थे, उनपर हम काम करना चाहते हैं, इसलिए फिर से प्रतिज्ञा का इजहार करने की बात हमने रखी है। खद्दर के, ग्रामोद्योग के कार्यकर्ताओं में या सरकार के या दूसरी पार्टियों में पहुँचे हुए लोगों में मैं कोई फर्क नहीं करता हूँ। बल्कि मैं मानता हूँ कि वे सर्वोदय को मानते हैं। इसपर अगर कोई पूछे कि वे उस-उस स्थान पर क्यों रहे हैं तो उनकी तरफ से यही जवाब मिलता है कि हम लोक-सेवक संघ बनाकर अपने पूरे विचारवालों की ताकत बनाना चाहते हैं। दूसरी पार्टियों में जो हमारे सह-विचारवाले पड़े हैं, उन सबकी सहानुभूति लेकर हम आगे बढ़ना चाहते हैं। इस तरह हमारी दुहरी प्रतिज्ञा है। हमने अपनी प्रतिज्ञा में कुछ बातें लाजमी मानी हैं। हम ऐसा समूह बनाना चाहते हैं, जो कि खमीर बने। लेकिन खमीर डरपोक नहीं होता है। वह अलग रहेगा तो क्या खमीर कहलायेगा? वह तो दूध के अन्दर घुसता है, पैठता है, लेकिन दही अच्छा हो तो दूध में पैठ सकता है। हम जामन का दही अलग रखते हैं, ताकि वह ठीक से किसी भी दूध में जाकर उसे दही बनाये। उसी तरह का जामन हम बनाना चाहते हैं।

स्टैंडिंग आर्मी

एक तरफ से हम लोक-सेवक-संघ जैसा बना रहे हैं, वह इसलिए नहीं कि हमारे विचार के जो भाई मुख्तलिफ जगहों में बैठे हैं, उन्हें हम दूर करना चाहते हैं, बल्कि इसलिए कि जो लोग जगह-जगह बैठे हैं, उनको ताकत मिले। मैं चाहता हूँ कि हमारे कुछ लोग पोस्ट-टेलिग्राफ में हों, कुछ रेलवे में हों, कुछ मिलिटरी में हों, कुछ मुख्तलिफ पार्टियों में हों। हम चाहते हैं कि सारी दुनिया में सर्वोदय हो। सारी दुनिया सर्व-सेवा-संघ बने। इसलिए हमारे जो भाई रेलवे, पोस्ट, मिलिटरी वगैरह में होंगे, वे अकेले लड़ते हैं, ऐसा न हो, बल्कि उनके पीछे एक स्टैंडिंग आर्मी हो, इसलिए हम सर्व-सेवा-संघ व्यापक बना रहे हैं। यह बात क्या ताकत रखती है, इसको ठीक से समझना चाहिए। नहीं तो लोग मूरख होकर कहेंगे कि हमारी एक छोटी जमात बन रही है और हम सबसे कहते हैं कि तुम हमारे नहीं हो, हम से अलग रहो। समझना चाहिए कि हमारे जो भाई मुख्तलिफ जगहों पर हैं, वे अकेलापन महसूस न करें। बल्कि ताकत महसूस करें। इसीलिए हम नया सर्व-सेवा-संघ बना रहे हैं। हमारे एक भाई पंजाब की मिनिस्ट्री में हैं, दूसरे मैसूर की मिनिस्ट्री में हैं, तीसरे कश्मीर की मिनिस्ट्री में हैं—ऐसे हमारे जो भाई भिन्न-भिन्न जगहों पर हैं, उनके हाथ मजबूत हों और वे ताकत महसूस करें कि हमारे पीछे कोई ताकत है, इसीलिए हम एक स्टैंडिंग आर्मी बना रहे हैं।

आपने इस मकान का उद्घाटन मेरे हाथ करवाया। मकान ईंट-पत्थर का नहीं, बल्कि विचार का होता है।

मैं कश्मीर से यहाँ आया हूँ। मैंने वहाँ देखा कि एक भी ऐसा तबका नहीं रहा, न सियासी, न मजहबी जिसके साथ, मेरी खुल-कर बात न हुई हो। सबने महसूस किया कि यह अपना आदमी है। इससे मेरी ताकत बढ़ी है। वह बल लेकर मैं यहाँ आया हूँ और लोगों को दूर ढकेलने के लिए नहीं, बल्कि उन्हें ताकत महसूस हो, इसीलिए हम सर्व-सेवा-संघ जैसी एक जमात बना रहे हैं। यह जमात सेवा का काम करेगी। ◆◆◆

अनुक्रम

१. पार्टियाँ आग लगानेवाली हैं! सियासत तोड़नेवाली है!!
जम्मू १० सितम्बर '५९ पृष्ठ ६९५
२. सारी दुनिया में सर्वोदय हो! सारी दुनिया सर्व-सेवा-संघ बने!!
सुजानपुर २१ सितम्बर '५९ ,, ६९७

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पताः गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी
www.vinoba.in